अध्याय – 14
पशुधन एवं कुक्कुटों की नस्लें
(Breeds of Livestock & Poultry)

14.1. परिचय :

राजस्थान प्रान्त की अर्थव्यवस्था में पशुओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। राज्य में देश के कुल दूध उत्पादन का 10 प्रतिशत, माँस उत्पादन का 30 प्रतिशत एवं अन्य उत्पादों का 20–40 प्रतिशत उत्पादन होता है। राज्य की कुल सकल घरेलू उत्पाद आय में लगभग 19 प्रतिशत योगदान पशुपालन से हैं। उत्पादन की दृष्टि से गाय, भैंस तथा मुर्गीपालन प्रमुख है। अतः गाय, भैंस तथा मुर्गियों की विभिन्न नस्लों के बारे में जानना आवश्यक है। राज्य सरकार ने पशुधन विकास के लिए पशुधन बोर्ड का गठन किया है। राज्य में पशुधन विकास के लिए चार जगह (ग्राम : *रामसर, अजमेर में गीर नस्ल, ग्राम– कुम्हेर–भरतपुर में मुर्रा भैंस नस्ल, नागौर में नागौरी नस्ल तथा डग–झालावाड में मुर्रा भैंस नस्ल*) व वृषण पालन केन्द्र खोले गये हैं। अतः उच्च उत्पादन के लिए गाय भैंस तथा कुक्कुटों की अच्छी नस्लों की जानकारी करना आवश्यक हो जाता हैं।

14.2. गायों की देशी नस्लें :

14.2.1. थारपारकर : इस नस्ल का मूल स्थान पाकिस्तान का सिन्ध जिला है। यह नस्ल जैसलमेर,, सीमावर्ती बाड़मेर एवं जोधपुर जिलों में पाई जाती है। इसका आकार छोटा तथा रंग हल्का भूरा होता है। शरीर गठीला तथा जोड़ मजबूत होते हैं। चेहरा सामान्य रूप में लम्बा, सिर का ऊपरी भाग अपेक्षाकृत चौडा और उभरा हुआ, ललाट एवं मध्यम दर्जे के सींग होते हैं। कान, बड़े–बड़े लटकते हुए होते हैं। गले के नीचे मांस लटकता रहता है।

चित्र 14.1: थारपारकर गाय

पिछला भाग शिथिल, तथा टखनों तक लटकने वाली पूँछ होती है। पूँछ का गुच्छा काला होता है (चित्र 14.1)। इसके नर पशु प्रौढावस्था में 500–600 किलोग्राम शरीर भार वाले तथा प्रौढ़ मादा पशु 400–450 किलोग्राम शरीर वाले होते हैं। अच्छी गायों का दूध उत्पादन 2500 लीटर प्रति ब्यांत होता है। दूध में वसा 4.5 प्रतिशत होती है।

14.2.2. कांकरेज :

इस नस्ल के पशु मुख्यतः बाड़मेर, जालौर, सांचोर एवं जोधपुर जिलों के सीमावर्ती क्षेत्रों में पाये जाते हैं। मूल स्थान गुजरात का 'कच्छ एणक्षेत्र' है (चित्र 14.2)।

चित्र 14.2: कांकरेज गाय

यह भार वाहन क्षमता के लिए प्रसिद्ध है। इसको भारतीय नस्लों में सबसे अधिक शक्तिशाली शरीर वाली नस्ल माना जाता है। छाती चौडी, सीधी कमर, पिछला भाग भली भांति विकसित, मोटी खाल,रंग रूपहला धूसर, काला धूसर पैरों की गुमची का रंग सदैव काला, अगली तथा पिछली टांगों पर काला निशान, गायों के निशान अपेक्षाकृत हल्के रंग के, गले के नीचे लटकने वाली गल कम्बल इनकी मुख्य पहचानें हैं। इस नस्ल की चुनिंदा गायें एक ब्यांत में औसतन 1500 लीटर दूध दे देती है। इनकी बछड़ियां साढे तीन वर्ष की अवस्था में प्रौढ़ हो जाती है। इनके प्रौढ़ नर का शरीर भार 600–700 किलो तथा प्रौढ़ मादा का भार 450–500 किलोग्राम होता है।

14.2.3. हरियाणा नस्ल :

भारत में यह नस्ल हरियाणा प्रान्त के रोहतक, करनाल, हिसार और गुड़गांव जिलों में पाई जाती है। राजस्थान

में मुख्यतया सीकर, झुंझुनू, जयपुर तथा श्रीगंगानगर आदि जिलों में पाई जाती है। इनके शरीर का अनुपात उत्तम होता है। शरीर देखने में ठोस, सिर ऊंचा उठा हुआ, सींग छोटे और भीतर की ओर मुड़े हुए, रंग सफेद या हल्का धूसर, लम्बा और पतला चेहरा, काला हड्डियोंदार माथा, सिर का गोल भाग उठा हुआ, छोटे और नुकीले कान, थन सुन्दर और दृढ़, पूँछ सुन्दर और काला गुच्छा इनकी पहचान के चिह्न है। इनके प्रौढ़ नर का शरीर भार 350–500 किलोग्राम तथा प्रौढ़ मादा का भार 300–400 किलोग्राम होता है। भूमि तेजी से जोतने तथा गाड़ी खींचने की दृष्टि से बैल अच्छा काम करते है। इनकी गाएं एक ब्यांत में 900–1200 किलोग्राम दूध देती है।

14.2.4. मालवी :

यह नस्ल मुख्यतया झालावाड़ जिले में पाई जाती है। इसका मूल स्थान मालवा क्षेत्र, मध्यप्रदेश है। यह मध्यम दर्जे की भार वाहक नस्ल है। काली मिट्टी में काम करने के लिए इस नस्ल के बैल बहुत ही उपयोगी होते हैं। इनका रंग भूरा होता है जिस पर काले धब्बे होते हैं। इनका शरीर ठिगना, गठीला और ठोस होता है। पीठ सीधी, पिछला भाग शिथिल, खाल न बहुत कसी और न बहुत ढीली, गल कम्बल मध्यम दर्जे का, छाती चौड़ी, कूबड़ काफी विकसित होती है। इनका सिर छोटा और चौड़ा, रकावी की तरह छिछला, थुथुनी स्पष्ट रूप से चौडी और कुछ मुडी हुई, सींग मजबूत नुकीले और माथे से निकल कर आगे की दशा में बढ़े हुए, कान छोटे और नुकीले, पूंछ सामान्य लम्बी और गुच्छा काला इनकी पहचान है। प्रौढ़ नर का भार 425 किलोग्राम होता है तथा प्रौढ़ मादा का शरीर भार 340 किलोग्राम होता है। औसत दूध उत्पादन 1000 से 1300 किलोग्राम प्रति ब्यांत है।

14.2.5. नागौरी :

इस नस्ल के मूल स्थान राजस्थान के नागौर और जोधपुर जिले है। नागौरी नस्ल के बैल चुस्त एवं फुर्तीले होते हैं साथ–साथ हल में चलने के लिए भी प्रसिद्ध है। इनका रंग सफेद होता है। शरीर लम्बा, पीठ सीधी, चौड़ी छाती, पिछला भाग मजबूत, अच्छी विकसित छोटी और मजबूत–गरदन, सीधी मांसल टांगे और उत्तम पैर इनकी विशेषतायें है। चेहरा पतला और कुछ लम्बा, माथा चपटा होता है। सींग सामान्य रूप से विकसित और सिर के बाह्य भागों से बाहरी दिशा में अग्रसर होकर ऊपर की ओर उठे हुए होते हैं इनके सींग के सिरे थोड़े से मुड़ें हुए होते हैं। कान अपेक्षाकृत बड़े होते हैं। पूँछ छोटी और दोनों टाँगों के जोड़ से थोडी नीचे लटकती हुई। प्रौढ़ नर का शरीर भार 550 से 600 किलोग्राम तथा प्रौढ़ मादा का 400 किलोग्राम होता है। औसत दूध उत्पादन 900–1000 किलोग्राम प्रति ब्यांत है।

14.2.6. राठी :

राठी उत्तर पश्चिमी राजस्थान, तथा पाकिस्तान में सिंध तथा दक्षिणी पंजाब के सीमान्त इलाकों में पाई जाती है। इस नस्ल के पशु मध्यम आकार के होते हैं। इस वंश के पशुओं का सिर साफ और घंसा हुआ ललाट, छोटे सींग तथा चौकस कान, सीधी व मजबूत कमर होती है (चित्र 14.3)।

चित्र 14.3: राठी गाय

इनके बैल शक्तिशाली और अच्छा काम करने वाले होते हैं। अधिक भारी काम तथा भार खींचने के लिए अनुपयुक्त होते हैं। इनके प्रौढ़ नर का शरीर भार 340 किलोग्राम तथा मादा का भार 250 किलोग्राम के लगभग होता है। औसत दूध उत्पादन 1200–1500 किलोग्राम प्रति ब्यांत है।

14.2.7. मेवाती :

दिल्ली का दक्षिणी भाग, राजस्थान का अलवर तथा भरतपुर का कुछ हिस्सा मेवात के नाम से जाना जाता है। मेवाती को कोसों नस्ल भी कहते हैं और यह पश्चिमी उत्तरी प्रदेश कें मथुरा जिले में पाई जाती है। इसका रंग सफेद होता है और हरियाणा नस्ल से मिलती जुलती है। इसमें हरियाणा नस्ल का भी कुछ अंश है। इसमें कुछ चिन्ह गीर नस्ल के भी मिलते है। आगे को उभरा हुआ माथा, सींग सिर के ऊपरी गोल हिस्से से निकल कर कुछ पीछे की ओर मुड जाते हैं, यही इनकी पहचान है। बैल शक्तिशाली होते हैं और सहज ही वश में आ जाते हैं। काम करने में उत्तम होते हैं। गायें दूध अधिक देती है। प्रतिदिन 4–5 किलोग्राम दूध देती है।

इनके प्रौढ नर का शरीर भार 500 से 550 किलोग्राम तथा मादा का 350–425 किलोग्राम होता है।

14.3. गायों की विदेशी नस्लें :

14.3.1. ब्राउनस्विस :

यह विश्व की सबसे प्राचीन नस्ल है जिसका मूल स्थान स्विटजरलैंड है। स्विटजरलैंड पहाड़ी और ऊबड–खाबड़ क्षेत्र वाला देश है जिसका आधा उत्पादक भाग चारागाह और घासों की पैदावार के लिए प्रयोग में लाया जाता है जिससे दूध उत्पादन होता है। यहां पर उत्पन्न दूध से पनीर तथा अन्य दुग्ध पदार्थ बनाए जाते हैं। इन जानवरों का रंग हल्का भूरा होता है। इनका डील–डौल विशाल होता है (चित्र 14.4)।

चित्र 14.4 : ब्राउनस्विस गाय

इनकी पीठ तथा गरदन ऊपर से सीधी होती है क्योंकि कूबड (लउच) नहीं होता। प्रौढ़ नर पशु का शरीर भार 700–800 किलोग्राम तथा मादा का 500–600 किलोग्राम होता है। यह आम तौर पर इटली, आस्ट्रेलिया, हंगरी, संयुक्त राज्य अमरीका, मैक्सिको तथा दक्षिणी अमरीका में पाई जाती है। यह नस्ल दूध उत्पादन में मध्यम मानी जाती है। इसका उत्पादन प्रति ब्यांत 3000–4000 लीटर तक होता है जिसमें वसा 4.5 प्रतिशत होती है। इसकी बछडियां 28–30 माह की उम्र तक पहला बच्चा पैदा कर देती है। इनके ब्यातांतर 13–14 महीने रहते है।

14.3.2. होलिस्टिन फ्रीजियन :

इस नस्ल का उद्भव नीदरलैंड के दो उत्तरी प्रान्तों पश्चिमी फीजलैंड तथा उत्तरी हालैंड में हुआ। ये पशु विशालकाय होते हैं और इनका रंग काला और सफेद होता है। सामान्यता प्रौढ नर पशु का शरीर भार 800–900 किलोग्राम तथा मादा का 550–650 किलोग्राम होता है (चित्र 14.5)।

चित्र 14.5: होलिस्टिन फ्रीजियन गाय

इस नस्ल को संसार की सबसे अच्छी दूध उत्पादन नस्ल माना जाता है। इस नस्ल की गाय ने एक ब्यांत में 19,000 लीटर दूध देकर कीर्तिमान स्थापित किया है। सामान्यतया इनका औसत उत्पादन 4500–6500 लीटर दूध प्रति ब्यांत है। इसके दूध में वसा की मात्रा 3.5 प्रतिशत पाई जाती है। इनकी बछड़ियां पहला बच्चा 28–30 माह की उम्र तक दे देती है और बाद के ब्यातांतर काल भी 13–14 महीने होते हैं। दूसरी नस्लों की तुलना में इनके दूध में चिकनाई कम होती है। चिकनाई का प्रतिशत 3 से 3.5 पाया गया है।

14.3.3. जर्सी :

इस नस्ल का मूल स्थान जर्सी द्वीप है। इस नस्ल की गायें अपेक्षाकृत छोटी होती है (चित्र 14.6)।

चित्र 14.6: जर्सी गाय

इस नस्ल का रंग लाल, भूरा, सफेद या मटमेला होता है। रीड की हड्डी सीधी तथा माथा चौड़ा होता है। इनका आकार भी अन्य नस्लों के समान होता है। इसके प्रौढ़ नर का भार 600–700 किलोग्राम तथा मादा का 400–500 किलोग्राम होता है। यह भी जल्दी प्रौढ़ होने वाली नस्ल जो 26–30 माह की उम्र में बच्चा दे देती है और बाद के ब्यातांतर भी 13–14 माह होते हैं। इनका औसत उत्पादन 2000 से 3000 लिटर प्रति ब्यांत होता है, चिकनाई इनमें 4.0 प्रतिशत होती है।

14.4. भैंसों की नस्लें :

14.4.1. मुर्रा :

यह नस्ल हरियाणा के रोहतक, जींद तथा हिसार एवं पंजाब के नाभा व पटियाला जिलों में पैदा हुई मानी जाती है।

चित्र 14.7 : मुर्राह भैंस

लेकिन यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान में पाई जाती है। यह नस्ल अधिक दूध देने के लिए प्रसिद्ध है। इसके शरीर का रंग गहरा काला होता है। छोटी चमकीली आँखें, पीठ चौड़ी, सिर उभरा हुआ होता है। इनकी विशेष पहचान यह है कि सींग घुमावदार और छोटे होते हैं (चित्र 14.7)। इनके प्रौढ़ नर का शरीर भार 600–700 किलोग्राम तथा मादा का 450–500 किलोग्राम होता है। यह नस्ल देर से प्रौढ़ होती है। पहला ब्यांत सामान्यतया साढे तीन साल में होता है। ये मौसमी प्रजनक पशु है और बहुधा सितम्बर से नवम्बर तक ब्याती है। सामान्यतया इनको नवम्बर से फरवरी तक ग्याभिन करवाया जाता है। यदि यह समय खो दिया गया तो ब्यातांतर काफी लम्बा हो जाता है। इस नस्ल का औसत दूध उत्पादन 2500 लिटर प्रति ब्यांत होता है और इनके दूध में 7–8 प्रतिशत वसा होती है।

14.4.2. सूरती :

इस नस्ल की भैंसों का मूल स्थान गुजरात है। राजस्थान में यह उदयपुर के आस–पास दक्षिणी भाग में पाई जाती है। शरीर का आकार उत्तम, कद मंझला, पेट आगे को पतला और पीछे चौडा होता है। इनका सिर लम्बा तथा चौड़ा सींगों के बीच में गोलाकार, पीठ सीधी आँखे उभरी हुई, सींग हंसिया जैसे : लम्बे तथा चपटे, पूँछ लम्बी गुच्छा सफेद, शरीर का रंग भूरा तथा हल्का काला, जबड़े और छाती पर दो सफेद पट्टियाँ इनकी पहचान के लक्षण है (चित्र 14.8)। ये दूध की दृष्टि से उत्तम होती है।

चित्र 14.8: सूरती भैंस

इनका औसत दूध उत्पादन 1800 लीटर प्रति ब्यांत होता है तथा चिकनाई 6–7 प्रतिशत होती है।

14.4.3. जाफराबादी :

नस्ल की भैंसें पश्चिमी गुजरात से लगते हुए राजस्थान प्रान्त के जिलों में अधिकता से पाई जाती है। गीर जंगल जो कि शेरों का स्थान माना गया है वहाँ पर इस नस्ल की भैंस काफी मात्रा में पाई जाती है। जाफराबाद के निकट होने के कारण इन्हें जाफराबादी कहा गया है।

चित्र 14.9: जाफराबादी भैंस

इस नस्ल की भैंसों का शरीर लम्बा, गले के नीचे झूलने वाला माँस और थन विकसित, सिर और गरदन भारी, माथा उभरा हुआ, सींग भारी और गरदन के दोनों ओर कुछ नीचे आकर मुड़े हुए होते हैं (चित्र 14.9)। ये दूध देने की दृष्टि से उत्तम मानी जाती है। ये एक दिन में 13–18 किलोग्राम दूध दे देती है। इनके नर पशु भार वाहन और जुताई के कार्यों में इस्तेमाल किए जाते है। इनके नर प्रौढ़ का शरीर भार 500–600 तथा मादा का 400–450 किलोग्राम तक होता है। इनको दूध तथा माँस दोनों के लिए रखा।

14.4.4. भदावरी :

इस नस्ल का नाम भदावर क्षेत्र के आधार पर रखा गया है। भदावर क्षेत्र आगरा जिले में स्थित है। इनका शरीर मझोले आकार का और आगे की ओर को पतला तथा पीछे की ओर चौडा होता है। इनका सिर छोटा तथा सींगों के बीच उभरा हुआ होता है। टाँगें मजबूत और छोटी, खुर काले, मादा पशुओं का पिछला भाग अधिक ऊँचा और भारी, पूँछ लम्बी पतली और लचकीली जिसके सिरे पर पिछली टाँगों के जोड़ तक लटकता, काला सफेद या बिल्कुल सफेद बालों का गुच्छा आदि इनकी पहचान के लक्षण है। इनका रंग तांबे जैसा, बाल छिदरे तथा जड़ से काले होते हैं। ये दूध उत्पादन की दृष्टि से अच्छी मानी जाती है। इनका दैनिक औसत उत्पादन लगभग 4 किलोग्राम होता है। दूध में चिकनाई सबसे अधिक होती है जो 7–7.5 प्रतिशत तक होती है। यह नस्ल काली नस्ल की भैंसों की अपेक्षा ताप अधिक सहन कर सकती है। इनके प्रौढ़ नर का शरीर भार 450–500 किलोग्राम तथा मादा का 375–425 किलोग्राम होता है।

14.5. मुर्गियों की नस्लें :

यद्यपि मुर्गियों की देशी एवं उन्नतिशील अनेक नस्ले हैं परन्तु जो नस्ल आर्थिक दृष्टिकोण से उपयोगी है और जिनका पालन पोषण किया जा रहा है। यहां हम केवल उन्हीं नस्लों का वर्णन करेंगे।

14.5.1. देशी नस्लें :

देशी शब्द उन नस्लों के लिये प्रयोग किया गया है जिनका निवास, वर्धन एवं विकास भारत में हुआ है और उनके लक्षण भारतीय मूल की मुर्गियों के समान है। भारत में पायी जाने वाली मुख्य नस्लें निम्न है :

1.	टैनिस	8.	काश्मीर
2.	नैकिड नैक	9.	फेवरलोब
3.	चटगांव	10.	टिटरी
4.	पंजाब ब्राउन	11.	वसरा
5.	असील	12.	कड़क नाथ
6.	धाधस	13.	टेलीचेरी
7.	लोलब	14.	कालाहस्ती

देशी मुर्गियों के रूप एवं आकार में काफी भिन्नता पायी जाती है और हमारे देश में अण्डे देने वाली तथा माँस उत्पादन दोनों तरह की मुर्गियाँ अधिक है। इन नस्लों का महत्व अण्डे देने में नहीं होकर अण्डे सेने तथा चूजों के लालन पालन में अधिक है। इन नस्लों में असील, चटगांव तथा धाधस सर्वोत्तम समझी जाती है।

14.5.1.1 असील :

असील नस्ल की मुर्गियाँ मध्यम आकार की होती है। इस नस्ल की मुर्गियों का लड़ने का स्वभाव है। अतः कुछ धनी लोग इस नस्ल के नरों को मनोरंजन के लिये लड़ाया करते थे। असील मुर्गे लड़ते समय अंतिम सांस तक लड़ते रहते हैं। इनकी दो नस्लें रेजा एवं तिकरा भी मिलती जुलती

नस्ले हैं। असील एक शुद्ध भारतीय नस्ल है यह एक मध्यम आकार की नस्ल है (चित्र 14.10)। इसका शरीर भार लगभग 4–5 कि.ग्रा. होता है। असील का विदेशी नसल की मुर्गी से किये गये संकरण (Cross) के परिणाम बहुत अच्छे निकले हैं इस संकर (cross breed) के माँस का स्वाद एवं गुण शुद्ध नस्ल से अच्छा होता हैं। पक्षियों की चाल एक सैनिक के समान होती है जिससे इनकी स्फूर्ति एवं शक्ति का आभास होता है।

चित्र 14.10 : असील मुर्गी

नर का शरीर भार 4–5 कि.ग्रा. तथा मादा का शरीर भार 3–4 कि.ग्रा. के लगभग होता है।

14.5.1.2. चटगाँव अथवा मलाया :

यह चटगाँव की नस्ल है इस नस्ल का मूल स्थान मलाया है जिसके नाम पर इसको मलाया नस्ल भी कहते हैं। यह एक काफी बड़ी नस्ल है। नर का शरीर भार 4–5 कि.ग्रा. और मादा का 3–4 कि.ग्रा. के लगभग होता है (चित्र 14.11)।

चित्र 14.11: मलाया मुर्गी

ये मुर्गियाँ काफी अण्डे देती हैं लेकिन असील की तरह अच्छी माँ नहीं होती। चूजे भी अति कोमल होते हैं जिनको पालने में अति सावधानी रखनी पड़ती है। चूजे स्वतंत्र रहना पसन्द करते हैं। इनका भी स्वभाव झगडालू होता है। अतः दूसरी नस्ल के चूजों के साथ रखकर नहीं पाला जा सकता। इनकी अच्छी वृद्धि एवं बढ़वार के लिये, खुला शुष्क स्थान आवश्यक है। यह भी एक लड़ाकू नस्ल है जिसका माँस स्वादिष्ट एवं अच्छी गन्ध वाला होता है।

इनकी कलंगी छोटी एवं छोटे अंगूर के गुच्छों के समान होती है। पक्षी का सिर लम्बा, चोंच लम्बी एवं पीली होती है। दाड़ी भी छोटी और लाल होती है। मादा के दाढ़ी बिल्कुल नहीं होती। कर्ण पालि (Ear lobe) छोटी, लाल तथा किसी–किसी की सफेद भी होती है। आँखे पीली तथा सफेद भी हो सकती है। आँखों की भौएं (Eyebrows) बड़ी एवं लटकी हुई होती है जिसके फलस्वरूप सिर चौड़ा और गर्दन लम्बी लगती है। छाती चौड़ी, भरावदार होती है। पीठ (Back) ढ़ालू होती है। नर में पीठ (Back) अपेक्षाकृत अधिक ढ़ालू, छोटी भरावदार होती है। कन्धों के पंख ऊंचे

होते हैं। टाँग पीली, सीधी, लम्बी, मजबूत तथा बिना पर वाली होती है। जबकि शरीर पर छोटे–छोटे रोएँ, (पर) काफी होते हैं। परों का कोई निश्चित रंग नहीं होता, अधिकतर भूरा, सफेद, काली और गहरी भूरी रंगों में पाई जाती है।

14.5.1.3. धाधस :

यह भी एक भारतीय नस्ल है। यह नस्ल फैबरोल नस्ल से काफी मिलती–जुलती होती है। इसकी टांगों पर, पर पाये जाते हैं। यह एक शक्तिशाली नस्ल है। स्वतंत्र रहना पसन्द करती है। इसका माँस काफी स्वादिष्ट होता है। भारतीय नस्लों में यह माँ के रूप में बहुत अच्छा काम करती है। इसकी कलंगी इकहरी मटर की शक्ल के समान होती है। किसी–किसी पक्षी के दाढ़ी होती है। इसकी टाँग लम्बी, सीधी एवं मजबूत होती है। जिनका रंग पीला अथवा पीला हरा होता है, पंख लाल, भूरे एवं काले होते हैं। यह नस्ल दक्षिणी भारत में पाई जाती है।

14.5.2. मुर्गियों की विदेशी नस्लें :

भूमध्य सागरीय नस्लों में मुख्य लैगहोर्न, मिनोरका, एनकोना, स्पेनिश, एण्डालूशियन तथा बटरकप हैं। इन सब में भी लैगहोर्न अधिक लोकप्रिय है। इन सब नस्लों के कुछ लक्षण तो सामान्य होते हैं जैसे भूमध्यसागरीय सभी नस्लों की पिण्डलियों पर रोएं नहीं होते हैं। इनकी कर्ण–पालि सफेद अथवा हल्के पीले रंग की होती है। मिनोरका के अलावा शेष सब नस्लें छोटी आकार की होती है। ये सब नस्लें जल्दी व्यस्क हो जाती है इनका स्वभाव तेज होता है इसलिये अच्छी माँ नहीं होती। इनके पालन–पोषण का व्यय कम होता है। इनकी अण्डों की उपज अधिक होती है अण्डों के कोश का रंग सफेद होता है।

लैगहॉर्न :

इस नस्ल की मुर्गी आकार में छोटी एवं स्वभाव में चंचल होती है शरीर के सभी अंगों में बहुत अधिक समन्वय होता है जिसके कारण पक्षी देखने में बहुत सुन्दर लगते हैं। पूरा शरीर बड़ा होता है पूँछ सदैव नीचे को लटकती हुई होती है। सिर छोटा होता है जिस पर ठोस कलंगी एवं दाढ़ी मजबूती के साथ लगी होती है। पक्षियों की पीठ लम्बी, छाती काफी चौड़ी और पिण्डलियाँ लम्बी होती हैं। इस नस्ल की मुर्गियों का रंग सफेद, भूरा, काला एवं कत्थई होता है (चित्र 14.12)।

चित्र 14.12 : लैगहॉर्न मुर्गी

इसके कुछ विभेद हल्के–सफेद, लाल, काली दुमवाली लाल एवं कोलम्बियन होती है। कलंगी की आकृति तथा रंग के अनुसार ही सफेद, भूरी एवं कत्थई विभेदों को और उपविभेदों (Subvarieties) में बाँट सकते हैं। इन सब उपविभेदों की चोंच, त्वचा, पिण्डलियाँ एवं अंगूठे पील रंग के होते हैं। इन सब का रूप एवं रोओं में भिन्नता होती है इनके नर के शरीर का भार 2.6 कि.ग्रा., मादा का 2 कि.ग्रा., नर पट्ठे का 2.2 कि.ग्रा. और मादा पठोर का शरीर भार 1.8 कि. ग्रा. के लगभग होता है।

नर की कलंगी इकहेरी और मध्यम आकार की होती है जो कि सीधी खड़ी रहती है जिसमें कटाव के कारण पांच बराबर आकार के दांते से होते हैं इसका पिछला भाग पीछे को फैला रहता है जबकि मुर्गियों में पहिले कटाव का अगला भाग सीधा खड़ा रहता है और शेष भाग किसी भी तरफ झुका रहता है। नर अथवा मादा किसी की भी कलंगी पर कोई निशान, मोड अथवा झूरियाँ नहीं होती।

सारांश

भारतीय उपमहाद्वीप में गायों तथा भैसों की बहुत नस्लें पायी जाती हैं। इनमें से राठी को दूध वाली नस्ल माना गया है। इसका मूल स्थान सिन्ध जिले का भाग है। थारपारकर को रेगिस्थान का दूधारू माना गया है। हरियाणा एवं नागौरी नस्लों को खेती एवम् यातायात के लिए उपयुक्त माना गया है। ब्राउन स्विस का मूल स्थान स्विट्जरलैण्ड माना गया है इसका भार 500–800 किलोग्राम होता है हेल्स्टीन का औसत उत्पादन 6000–7000 लीटर प्रति ब्यांत माना गया है। इसके दूध में वसा की मात्रा कम पायी जाती है। मुर्रा की नस्ल पंजाब तथा हरियाणा राज्यों में अधिक मिलती है। इसके सींग घुमावदार तथा दूध 2000 लीटर प्रति ब्यांत दे देती है। मुर्गियों में लगभग 14 नस्लें पायी जाती है इनमें माँस के लिए सबसे अच्छी घाघस तथा अण्डज उत्पति के लिए व्हाइट लेग हार्न को माना गया है।

प्रश्न :

1. थारपारकर गाय की उत्पति हुई थी?
   (अ) सिंध से
   (ब) जैसलमेर से
   (स) कच्छ से
   (द) कारचीं से
2. सूरती का जन्म स्थल माना गया है :
   (अ) गुजरात
   (ब) पंजाब
   (स) हरियाणा
   (द) राजस्थान
3. मुर्गियों में अण्डज उत्पति के लिए नस्ल है :
   (अ) असील
   (ब) घाघस
   (स) लेगहॉर्न
   (द) चटगाँव
4. गायों में विदेशी नस्लों का वर्णन किस तरह से करोगे?
5. मुर्गियों की देशी नस्लों का वर्णन सविस्तार करे।
6. मुर्गियों की लेगहॉर्न नस्ल कहाँ से सम्बन्धित है? तथा इसकी शरीर बनावट का वर्णन कीजिए।